ध्यान दें

- सभी गर्भवती महिलाओं को एच.आई.वी. संक्रमण की जांच गर्भ का पता चलते ही तुरंत करवाना चाहिए।
- एच.आई.वी. संक्रमित पाये जाने पर चिकित्सक की सलाह के अनुसार देखभाल और खानपान का ध्यान रखा जाना चाहिए।
- यदि महिला एचआईवी संक्रमित है तो उसका पंजीयन ए.आर.टी. केन्द्र में तुरंत कराएं।
- एच.आई.वी. संक्रमित गर्भवती महिला का प्रसव अस्पताल में ही करायें।
- एच.आई.वी. संक्रमित माता व बच्चे को चिकित्सीय परामर्श के अनुसार ए.आर.वी. प्रोफ़ायलेक्सिस लेना चाहिये।
- डिलेवरी के बाद माँ तथा नवजात शिशु को लगातार चिकित्सक के सम्पर्क में रहना चाहिए।
- नवजात शिशु में एच.आई.वी. संक्रमण की स्थिति जानने के लिए 18 माह की आयु में एच.आई.वी. की जाँच अवश्य कराई जानी चाहिए। 6 सप्ताह के शिशु की DNA/पी.सी.आर. जाँच करवाकर एच.आई.वी. की स्थिति जल्दी मालूम की जा सकती है। यह सुविधा चिकित्सा महाविद्यालय इंदौर, जबलपुर, भोपाल, रीवा, ग्वालियर व ज़िला चिकित्सालय मंदसौर व छिन्दवाड़ा, मुरैना, सिवनी, बालाघाट, उज्जैन, रतलाम में नि:शुल्क उपलब्ध है।
- बच्चे के स्तनपान और पोषण आहार के संबंध में चिकित्सक और परामर्शदाता से चर्चा करके उचित निर्णय लिया जाना चाहिए

अधिक जानकारी के लिए नज़दीक के एकीकृत परामर्श एवं जाँच केन्द्र में संपर्क करें।

शिशु को आहार देने के तौर – तरीके

एच.आई.वी. पॉजिटिव माताओं द्वारा शिशु को पहले छह महीने आहार देने के दो विकल्प हैं - केवल स्तनपान द्वारा या केवल रिप्लेसमेंट (यानी उसके बदले में दिया जाने वाला आहार)। इन दोनों विकल्पों से एच.आई.वी. पॉजिटिव माताएं अपने शिशुओं को कोई एक आहार दे सकती हैं।

माँ के दूध में सभी पोषक तत्व और पानी मौजूद होता है जीवन के पहले छह महीनों में बच्चे को सिर्फ इन्हीं की ज़रूरत होती है। इससे बच्चे का रोगों और एलर्जी से भी बचाव होता है।

बच्चे के आहार के संबंध में चिकित्सक की सलाह लेवें।

माँ के दूध के बदले में कोई अन्य आहार तभी दिया जाना चाहिए जब वह शिशु के द्वारा स्वीकार्य हो। उसकी क़ीमत इतनी हो कि परिवार उसे खरीद सके और उसे लम्बे समय तक दिया जा सके, साथ ही बनाने में आसान हो और वह सुरक्षित भी हो।

बच्चों को एच.आई.वी. संक्रमण से बचाना अब है आसान
पी.पी.टी.सी.टी./आई.सी.टी.सी. केन्द्रों पर जाकर कराओ जांच व रखो पूरा ध्यान।

मध्यप्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण समिति
द्वितीय तल, तिलहन संघ भवन
1 अरेरा हिल्स, भोपाल म.प्र.
Email : mpsacs@gmail.com
www.mpsacsb.org

आईये नवजात शिशुओं को एच.आई.वी. संक्रमण से बचाएं

पी.पी.टी.सी.टी. केन्द्र

एच.आई.वी./एड्स क्या है ?

Human Immuno-deficiency Virus (ह्यूमन इम्यिनो डेफिएन्सी वायरस) एचआईवी एक ऐसा वायरस है जो कि केवल मानव शरीर में पाया जाता है तथा मनुष्य की प्रतिरोधक क्षमता को धीरे-धीरे कम कर देता है या नष्ट कर देता है।

एड्स

A	-	Acquired	प्राप्त करना
I	-	Immuno	प्रतिरोधक
D	-	Deficiency	कमी
S	-	Syndrome	कई बीमारियों का समूह

एड्स एक अर्जित या प्राप्त किया हुआ संक्रमण है। एच.आई.वी. वायरस धीरे - धीरे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करता जाता है जिससे मनुष्य के शरीर में कई प्रकार की बीमारियों के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। यहाँ यह समझना बहुत जरूरी है कि एड्स संक्रमण का कोई विशेष लक्षण नहीं होता है बल्कि एच.आई.वी. वायरस की संख्या बढ़ने पर अन्य बीमारियों के लक्षण जैसे - बिना किसी स्पष्ट कारण के एक महीने से अधिक लगातार या रुक - रुक कर बुखार आना, एक माह में बिना किसी कारण के शरीर के वज़न में 10 प्रतिशत या उससे अधिक की कमी, बार-बार दस्त लगना आदि लक्षण दिखाई देने लगते हैं। परंतु यह आवश्यक नहीं है कि ये लक्षण किसी व्यक्ति में दिखाई देने पर उसे एच.आई.वी. संक्रमण ही हो, ये लक्षण किसी अन्य बीमारी के भी हो सकते हैं। अतः एच.आई.वी. की जांच अवश्य करायें।

एच.आई.वी./एड्स संक्रमण कैसे होता है ?

एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक एच.आई.वी. वायरस पहुंचने के 4 रास्ते हैं –

- एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौन संपर्क से।
- एच.आई.वी. संक्रमित सिरिंजो व सुईयों के पुनः उपयोग से।
- एच.आई.वी. संक्रमित रक्त या रक्त उत्पाद चढ़ाने से।
- एच.आई.वी. संक्रमित माँ से उसके होने वाले शिशु को।

एच.आई.वी./एड्स संक्रमण कैसे नहीं होता है ?

- एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति के साथ खाना खाने से।
- सामान्य सामाजिक व्यवहार जैसे हाथ मिलाने, गले मिलने से।
- खाने के बर्तन, कपड़े, बिस्तर शौचालय टेलीफ़ोन स्विमिंग पूल इत्यादि के सामूहिक उपयोग से।
- खांसने, छींकने या हवा से।
- मच्छरों के काटने या घरों में पाए जाने वाले कीड़े-मकोड़ों के काटने से एच.आई.वी. संक्रमण नहीं होता है।

नवजात शिशु में संक्रमण की संभावना

एच.आई.वी. संक्रमित गर्भवती महिला से उसके होने वाले शिशु में संक्रमण की संभावना होती है। यह संभावना यद्यपि 20 से 45% होती है तथा गर्भावस्था, प्रसव तथा स्तनपान के दौरान संक्रमण संभावित होता है। यह बहुत आशा जनक है कि प्रिवेंशन ऑफ पेरेंट टू चाइल्ड ट्रांसमिशन (पीपीटीसीटी) कार्यक्रम के माध्यम से सभी एकीकृत परामर्श व जांच केन्द्रों (आईसीटीसी) में गर्भवती माताओं की एच.आई.वी. जांच कराने हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। यदि समय रहते यह ज्ञात हो जाए कि कोई गर्भवती माता एच.आई.वी. संक्रमित है तो उसके शिशु को होने वाले संक्रमण से बचाया जा सकता है।

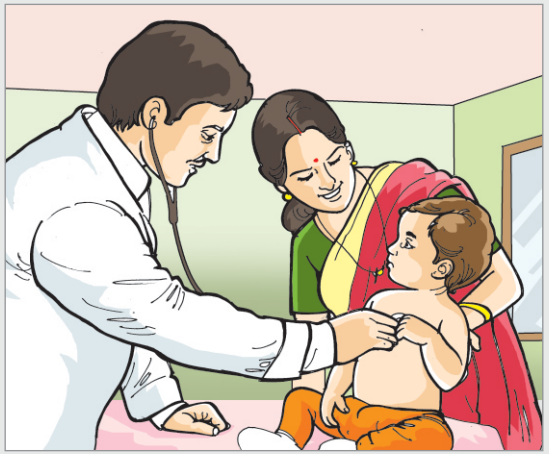

नवजात शिशु में संक्रमण का बचाव

वर्तमान में नवीन प्रोटोकॉल के अंतर्गत यह प्रयास किया जाता है कि महिलाओं को गर्भावस्था के आरंभिक चरण में ही एच.आई.वी. जांच कराने हेतु प्रेरित किया जाए तथा यह ज्ञात होते ही कि कोई गर्भवती माता एच.आई.वी. संक्रमित है उसे तुरंत ए.आर.टी. केन्द्र में पंजीकृत कर उसका ए.आर.टी. उपचार प्रारंभ कर दिया जाता है। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि उसका प्रसव सुरिक्षत रूप से अस्पताल में हो तथा प्रसव के उपरांत नवजात शिशु को भी न्यूनतम छः सप्ताह तक ए.आर.वी. प्रोफाइलेक्सिस प्रदान की जावे। प्रसव के उपरांत भी माता की ए.आर.टी. दवाएं निरंतर जारी रहेंगी तथा अन्य मरीजों की तरह उसे समस्त जांचें एवं देखभाव सेवाएं आजीवन प्रदान की जाएंगी।

इसके अतिरिक्त शिशु में एच.आई.वी. संक्रमण के शीघ्र निदान हेतु उसकी एच.आई.वी. जांच भी जन्म के छः सप्ताह उपरांत कराई जाना चाहिये इस हेतु आवश्यक परामर्श भी माता-पिता को प्रदान किया जाता है। नवजात शिशुओं में एच.आई.वी. संक्रमण की रोकथाम की दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है कि सभी गर्भवती महिलाओं की एचआईवी जांच सुनिश्चित हो तथा उसके पश्चात एचआईवी पॉजिटिव पाई जाने वाली माताओं को एवं उनके शिशुओं को उपरोक्तानुसार आवश्यक सेवाओं की सुनिश्चितता हेतु सार्थक एवं सम्मिलित प्रयास किये जाएं।

एच.आई.वी. की जाँच कहाँ कराएं ?

मध्यप्रदेश के सभी शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय (मेडिकल कॉलेजों) एवं जिला चिकित्सालयों में एकीकृत परामर्श एवं जांच केन्द्र (आई.सी.टी.सी.) के नाम से संचालित केन्द्रों एवं इसके अतिरिक्त, कुछ सिविल अस्पतालों एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में संचालित आई.सी.टी.सी. केन्द्रों में भी गर्भवती माताओं हेतु एच.आई.वी. जांच की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध है। इन अस्पतालों में चिकित्सकों द्वारा प्रसव कराया जाता है और शिशु में एच.आई.वी. संक्रमण से बचाव के लिए माँ और शिशु को दवा की खुराक निःशुल्क दी जाती है।